This question paper contains **4** printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **2989**

Unique Paper Code : **2051202** **F-2**

Name of the Paper : **Aadikalin Aur Bhaktikalin Kavya [DC-1.3]**

Name of the Course : **Bachelor with Honours : Hindi**

Semester : **II**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या करते हुए उनके रचना कौशल पर विचार कीजिए : 9,9

(क) छापा-तिलक तज दीन्ही रे, तो से नैना मिला के ।

प्रेम बटी का मदवा पिलाके

मतवारी कर दीन्ही रे, मो से नैना मिला के ।

'खुसरो' निजाम पै बलि-बलि जइए,

मोहे सुहागन कीन्ही रे, मो से नैना मिला के ।

P.T.O.

अथवा

अब मैं नाच्यौ बहुत गुपाल ।

काम-क्रोध कौ पहिरि चोलना, कंठ विषय की माल ॥

महामोह के नूपुर बाजत, निंदा-सब्द-रसाल ।

भ्रम-भोयौ मन भयौ पखावज, चलत असंगत चाल ॥

तृष्ना नाद करति घट भीतर, नाना बिधि दै ताल ।

माया को कटि फेंटा बाँध्यौ, लोभ-तिलक दियौ भाल ॥

कोटिक कला काछि दिखराई जल-थल सुधि नहिँ काल ।

सूरदास की सबै अविद्या, दूरि करौ नँदलाल ॥

(ख) दुलहनी गावहु मंगलचार,

हम घरि आए हो राजा राम भरतार ॥

तन रत करि मैं मन रत करिहूँ, पंचतत्त बराती ।

राम देव मोरैं पाँहुनैं आये मैं जोबन मैं माती ॥

सरीर सरोवर बेदी करिहूँ, ब्रह्मा वेद उचार ।

रामदेव सँगि भाँवरी लैहूँ, धनि धनि भाग हमार ॥

सुर तेतीसूँ कौतिग आये, मुनिवर सहस अठ्यासी ।

कहै कबीर हँम ब्याहि चले हैं, पुरिष एक अबिनासी ॥

अथवा

बर दंत की पंगति कुंदकली अधराधर-पल्लव खोलन की ।

चपला चमकैं घन बीच-जगैं छबि मोतिन माल अमोलन की ।

घुँघुरारि लटैं लटकैं मुख ऊपर कुंडल लोल कपोलन की ।

नेवछावरि प्रान करै तुलसी बलि जाउँ लला इन बोलन की ॥

2. अमीर खुसरो के साहित्यिक योगदान पर विचार कीजिए । 14

अथवा

'मृगावती' में अभिव्यक्त प्रेम के स्वरूप का विवेचन कीजिए ।

3. कबीर की काव्य-भाषा पर विचार कीजिए । 14

अथवा

'कवितावली' के बालकांड के काव्य-सौष्ठव पर विचार कीजिए ।

4. कृष्णकाव्य परंपरा में मीरा के काव्य का स्थान निर्धारित कीजिए । 14

अथवा

सूरदास की भक्ति-भावना का परिचय दीजिए ।

5. निम्नलिखित पर आलोचनात्मक टिप्पणी लिखिए : 7½+7½=15

(क) मीरा काव्य में नारी भावना

अथवा

सूफी काव्य की प्रतीकात्मकता ।

(ख) तुलसी के राम

अथवा

कबीर का समाज-सुधारक रूप ।